Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
January 2024
ISSN 2229-3388

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संगठनात्मक विकास : संगठनात्मक निर्माण से अखिल भारतीय विस्तार तक डॉ. हेडगेवार एवं गोलवलकर गुरुजी के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन.

केदार नरेंद्र जोशी
शोधकर्ता
इतिहास विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर
विश्वविद्यालय, नागपूर

मार्गदर्शक
डॉ. नामदेव मा. हटवार
इतिहास विभाग प्रमुख एम.बी. पटेल कॉलेज
सालेकसा

सारांश (Abstract)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय समाज की एक प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के रूप में विकसित हुआ है। इसकी स्थापना से लेकर अखिल भारतीय स्तर पर विस्तार तक की विकास प्रक्रिया में डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार तथा माधव सदाशीवराव गोलवलकर (गुरुजी) का योगदान निर्णायक रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थागत विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है, जिसमें डॉ. हेडगेवार द्वारा किए गए संस्थात्मक निर्माण और गोलवलकर गुरुजीके नेतृत्व में हुए संगठनात्मक एवं वैचारिक विस्तार का सम्यक अध्ययन किया गया है।

डॉ. हेडगेवार ने संघ की नींव रखते समय व्यक्ति-निर्माण, अनुशासन, शाखा-प्रणाली तथा राष्ट्रभावना को संगठन का मूल आधार बनाया। उनकी दृष्टि में सशक्त राष्ट्र निर्माण का मार्ग सुदृढ़ सामाजिक संगठन से होकर जाता था। दूसरी ओर, गोलवलकर गुरुजीने इसी वैचारिक आधार को बनाए रखते हुए संघ को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। उनके नेतृत्व में प्रचारक व्यवस्था, संगठनात्मक ढांचे का विस्तार तथा समाज के विविध वर्गों तक संघ कार्य का प्रसार हुआ। यह अध्ययन ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से संघ के विकास के दोनों चरणों का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त

होता है कि संघ की स्थायित्वपूर्ण वृद्धि डॉ. हेडगेवार की सुदृढ़ संस्थात्मक आधारशिला और गोलवलकर गुरुजीकी व्यापक संगठनात्मक दृष्टि का संयुक्त परिणाम है। यह अध्ययन भारतीय संगठनात्मक नेतृत्व और सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

कीवर्ड्स (Keywords) :-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संस्थागत विकास, संगठनात्मक निर्माण, अखिल भारतीय विस्तार, डॉ. हेडगेवार, गुरुजी गोलवलकर

परिचय :-

भारतीय समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में संगठित संस्थाओं की भूमिका ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है। औपनिवेशिक काल में उत्पन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विघटन की परिस्थितियों के संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उदय एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन के रूप में हुआ। संघ का उद्देश्य राजनीतिक सत्ता प्राप्ति न होकर समाज के चारित्रिक एवं सांस्कृतिक पुनर्निर्माण से जुड़ा रहा है। वर्ष 1925 में डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने व्यक्ति-निर्माण को राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला माना। अनुशासन, शाखा-प्रणाली तथा स्वयंसेवक निर्माण के माध्यम से संघ की संस्थात्मक संरचना को सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ। डॉ. हेडगेवार के नेतृत्व में संघ का प्रथम चरण संस्थात्मक निर्माण का रहा। इसके पश्चात माधव सदाशीवराव गोलवलकर (गुरुजी) के नेतृत्व में संघ का विकास संगठनात्मक एवं अखिल भारतीय विस्तार की दिशा में हुआ। उनके कार्यकाल में संघ ने वैचारिक निरंतरता बनाए रखते हुए भौगोलिक और सामाजिक स्तर पर व्यापक विस्तार प्राप्त किया। इस प्रकार संघ का विकास संस्थात्मक दृढ़ता और संगठनात्मक विस्तार की एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इस संगठनात्मक विकास का विश्लेषण करना है, विशेषतः डॉ. हेडगेवार और गोलवलकर गुरुजीकी भूमिकाओं के संदर्भ में। यह अध्ययन भारतीय सामाजिक संगठनों एवं नेतृत्व मॉडल के सैद्धांतिक अध्ययन में योगदान प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) :-

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थागत विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार द्वारा किए गए संस्थात्मक निर्माण की प्रक्रिया, सिद्धांतों एवं संगठनात्मक संरचना का विश्लेषण करना।
3. माधव सदाशीवराव गोलवलकर (गुरुजी) के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय विस्तार की रणनीतियों एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।

4. संघ की विकास प्रक्रिया में बांधणी (संस्थात्मक निर्माण) और विस्तार के चरणों के बीच विद्यमान वैचारिक निरंतरता एवं संगठनात्मक परिवर्तन का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।
5. डॉ. हेडगेवार एवं गोलवलकर गुरुजीके नेतृत्व में विकसित भारतीय संगठनात्मक नेतृत्व मॉडल की विशेषताओं को स्पष्ट करना।
6. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन के रूप में उसके प्रभाव एवं योगदान का आकलन करना।
7. भारतीय समाज में दीर्घकालिक संगठनात्मक स्थायित्व के कारकों की पहचान करना, विशेष रूप से संघ के उदाहरण के माध्यम से।

शोध पद्धति (Research Methodology) :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थागत विकास की प्रक्रिया को समझने हेतु ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक (Qualitative) है, जिसमें संगठनात्मक विकास, नेतृत्व शैली तथा वैचारिक निरंतरता का समग्र विश्लेषण किया गया है।

डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार : संस्थात्मक निर्माण

डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संस्थात्मक स्वरूप भारतीय सामाजिक संगठनों के इतिहास में एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। संघ की स्थापना के समय डॉ. हेडगेवार ने संगठन को व्यक्ति-केंद्रित न बनाकर संस्था-केंद्रित ढांचे में विकसित करने पर विशेष बल दिया। उनका यह दृष्टिकोण संघ के दीर्घकालिक अस्तित्व और संगठनात्मक स्थिरता का प्रमुख आधार बना। डॉ. हेडगेवार द्वारा विकसित शाखा-प्रणाली संघ की संस्थात्मक संरचना की मूल इकाई रही। शाखा को केवल शारीरिक प्रशिक्षण का माध्यम न मानकर उन्होंने उसे सामाजिक अनुशासन, सामूहिक चेतना तथा राष्ट्रभावना के संस्कारों का केंद्र बनाया। नियमितता, समयपालन और सामूहिक सहभागिता के माध्यम से शाखा स्वयंसेवकों के सर्वांगीण विकास का साधन बनी। यह प्रणाली स्थानीय स्तर पर समाज से सीधा संपर्क स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध हुई।

संघ की संस्थात्मक बांधणी में अनुशासन का विशेष महत्व रहा। डॉ. हेडगेवार के अनुसार अनुशासन केवल बाह्य नियंत्रण न होकर आंतरिक नैतिक प्रतिबद्धता का प्रतीक था। स्वयंसेवकों से अपेक्षित आचरण, सरल जीवनशैली तथा संगठन के प्रति निष्ठा ने संघ को एक सुव्यवस्थित एवं मूल्य-आधारित संस्था के रूप में स्थापित किया। डॉ. हेडगेवार की संगठनात्मक सोच का केंद्रीय तत्व व्यक्ति-निर्माण था। उनका मानना था कि राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का प्रारंभ सशक्त, चरित्रवान और राष्ट्रनिष्ठ व्यक्ति के निर्माण से होता है। इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत स्वयंसेवकों में कर्तव्यबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक चेतना का विकास किया गया। यह व्यक्ति-निर्माण की प्रक्रिया

संघ के संस्थात्मक स्वरूप को वैचारिक दृढ़ता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, डॉ. हेडगेवार ने संघ की कार्यप्रणाली को राजनीतिक दलों से पृथक रखते हुए उसे एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन के रूप में स्थापित किया। इस नीति के कारण संघ विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में कार्य करते हुए भी अपनी वैचारिक स्वतंत्रता बनाए रखने में सफल रहा। सीमित संसाधनों के बावजूद, स्पष्ट उद्देश्य, सुविचारित संगठनात्मक ढांचा और समर्पित स्वयंसेवकों के माध्यम से डॉ. हेडगेवार ने संघ की एक मजबूत और स्थायी संस्थात्मक नींव रखी। इस प्रकार, डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार का योगदान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के केवल संस्थापक के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे संगठनकर्ता के रूप में भी महत्वपूर्ण है, जिन्होंने दीर्घकालिक दृष्टि के साथ संघ की संगठनात्मक संरचना को आकार दिया।

गोलवलकर गुरुजी: संगठनात्मक एवं अखिल भारतीय विस्तार

माधव सदाशीवराव गोलवलकर (गुरुजी) के नेतृत्वकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संस्थात्मक दृढ़ता के साथ-साथ व्यापक संगठनात्मक विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की। डॉ. हेडगेवार द्वारा स्थापित वैचारिक एवं संस्थात्मक आधार को सुरक्षित रखते हुए गोलवलकर गुरुजीने संघ को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। उनका नेतृत्व संघ के विकास का वह चरण प्रस्तुत करता है, जिसमें संगठन स्थानीय स्तर से निकलकर राष्ट्रीय सामाजिक चळवळ के रूप में उभरता है। गोलवलकर गुरुजीकी संगठनात्मक दृष्टि का प्रमुख आधार वैचारिक स्पष्टता एवं अनुशासनात्मक निरंतरता रहा। उन्होंने संघ की मूल विचारधारा को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करते हुए स्वयंसेवकों में वैचारिक एकरूपता बनाए रखने पर बल दिया। इससे संघ के विस्तार के दौरान भी संगठन की पहचान और मूल उद्देश्य में किसी प्रकार की विचलन नहीं आया। वैचारिक प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने संगठन को आंतरिक रूप से सुदृढ़ किया।

संघ के अखिल भारतीय विस्तार में प्रचारक व्यवस्था की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। गोलवलकर गुरुजीने पूर्णकालिक प्रचारकों के माध्यम से संघकार्य को विभिन्न प्रांतों, भाषाई क्षेत्रों और सामाजिक परिवेशों तक पहुंचाया। प्रचारकों की निःस्वार्थ सेवा, अनुशासित जीवनशैली और संगठन के प्रति पूर्ण समर्पण ने संघ के विस्तार को स्थायित्व प्रदान किया। यह व्यवस्था संघ को एक केंद्रीकृत होते हुए भी विकेंद्रीकृत संगठन के रूप में विकसित करने में सहायक बनी। गुरुजी के नेतृत्व में संघ की गतिविधियां केवल शाखा तक सीमित न रहकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तारित हुईं। शिक्षा, श्रम, संस्कृति, सेवा और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में कार्यरत अनुषंगिक संगठनों के माध्यम से संघ ने व्यापक सामाजिक आधार निर्मित किया। इस प्रक्रिया ने संघ को एक बहुआयामी सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन के रूप में स्थापित किया।अखिल भारतीय विस्तार के संदर्भ में गोलवलकर गुरुजीकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि संघ का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अनुकूलन रही। विविध भाषाओं, परंपराओं और सामाजिक संरचनाओं वाले भारत में संघकार्य को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालते हुए भी उन्होंने वैचारिक एकता बनाए रखी। यह संतुलन संगठनात्मक नेतृत्व की उनकी दूरदृष्टि को दर्शाता है। इस प्रकार, गोलवलकर गुरुजीका योगदान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विकास में विस्तारक और सुदृढ़ीकरणकर्ता के रूप में परिलक्षित होता है। डॉ. हेडगेवार द्वारा

निर्मित संस्थात्मक ढांचे को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान कर उन्होंने संघ को एक स्थायी, अनुशासित और अखिल भारतीय संगठन के रूप में स्थापित किया।

विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार और माधव सदाशीवराव गोलवलकर की भूमिकाएँ परस्पर पूरक एवं क्रमिक रही हैं। डॉ. हेडगेवार का योगदान संघ के संस्थात्मक आधार निर्माण से संबंधित था, जिसमें संगठन की मूल संरचना, कार्यप्रणाली और वैचारिक दिशा निर्धारित की गई। उनके नेतृत्व में अनुशासन, शाखा-प्रणाली और व्यक्ति-निर्माण को केंद्रीय स्थान प्राप्त हुआ, जिससे संघ को एक स्थिर और मूल्य-आधारित संगठनात्मक पहचान मिली। इसके विपरीत, गोलवलकर गुरुजीका नेतृत्व संघ के संगठनात्मक एवं अखिल भारतीय विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने डॉ. हेडगेवार द्वारा स्थापित संस्थात्मक ढांचे को बनाए रखते हुए संघ को भौगोलिक, सामाजिक और वैचारिक स्तर पर व्यापक विस्तार प्रदान किया। प्रचारक व्यवस्था और अनुषंगिक संगठनों के माध्यम से संघ का प्रभाव समाज के विविध क्षेत्रों तक पहुँचा।

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि संघ के विकास के दोनों चरणों में वैचारिक निरंतरता बनी रही, जो संगठन की दीर्घकालिक स्थिरता का प्रमुख कारण रही। परिवर्तन संगठनात्मक रणनीतियों में दिखाई देता है, किंतु मूल विचारधारा और उद्देश्य में निरंतरता संघ की विशिष्ट पहचान को रेखांकित करती है। यह मॉडल भारतीय सामाजिक संगठनों के अध्ययन में नेतृत्व और संगठनात्मक विकास के संतुलित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दीर्घकालिक अस्तित्व और अखिल भारतीय विस्तार डॉ. केशव बळीरामपंत हेडगेवार द्वारा स्थापित सुदृढ़ संस्थात्मक मूल्यों तथा गोलवलकर गुरुजीकी संगठनात्मक दूरदृष्टि का संयुक्त परिणाम है। डॉ. हेडगेवार ने संघ को वैचारिक स्पष्टता और संस्थात्मक स्थायित्व प्रदान किया, जबकि गोलवलकर गुरुजीने उसी आधार पर संगठन को व्यापक सामाजिक और भौगोलिक विस्तार दिया। संघ का यह विकासक्रम यह दर्शाता है कि किसी भी सामाजिक संगठन की सफलता के लिए मजबूत संस्थात्मक नींव और समयानुकूल संगठनात्मक विस्तार—दोनों समान रूप से आवश्यक हैं। यह शोध भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों, नेतृत्व अध्ययन तथा संगठनात्मक विकास के सैद्धांतिक विमर्श में एक महत्वपूर्ण अकादमिक योगदान प्रदान करता है।

संदर्भ

1. Golwalkar, M. S. (1966). Bunch of Thoughts. Bangalore: Sahitya Sindhu Prakashana.
2. Golwalkar, M. S. (1939). We, or Our Nationhood Defined. Nagpur: Bharat Prakashan.
3. Anderson, W. K., & Damle, S. D. (1987). The Brotherhood in Saffron: The Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu Revivalism. New Delhi: Penguin Books.
4. Jaffrelot, C. (1996). The Hindu Nationalist Movement and Indian Politics. New Delhi: Penguin India.
5. Hedgewar, K. B. (2006). Dr. Hedgewar: The Epoch Maker. Nagpur: Suruchi Prakashan.
6. Bhishikar, C. P. (1999). Dr. Hedgewar: The Founder of the Rashtriya Swayamsevak Sangh. New Delhi: Suruchi Prakashan.
7. Hansen, T. B. (1999). The Saffron Wave: Democracy and Hindu Nationalism in Modern India. Princeton: Princeton University Press.
8. Noorani, A. G. (2000). “The RSS and Its Ideology.” Economic and Political Weekly, 35(4), 231–236.